











# संपादकीय

## विदेशी मंच पर राहुल

**आखिर** काग्रस के वारष्ठ सासद राहुल गांधी का एजडा क्या है? वह भारतीय राजनीति में कॉन-स-वृत्तांत तय करने पर आमादा हैं? माना जा सकता है कि प्रधानमंत्री मोदी से उनकी निजी खुन्नसप्त है, लेकिन भारत देश के सम्मान और उसकी वैशिक प्रतिष्ठा का सरोकार तो उनका भी होगा! राहुल बहरीन, मलेशिया, सिंगापुर और बार-बार ब्रिटेन के विदेशी मंचों से गलत तथ्य क्यों पेश करते रहे हैं? क्या यह देश-विरोध नहीं है? इन भाषणों का सारांश ऐसा है, जो वह संसद में और संसद के बाहर पहले ही बोल चुके हैं। उनका यह आरोप भी गलत है कि विपक्षी सरकार के खिलाफ कुछ बोलते हैं, तो उन्हें जेल में डाल दिया जाता है। राहुल संसद के भीतर भी बोलते हैं और संसद के परिसर में भी खुब बयानबाजी करते रहे हैं। यह दीगर है कि वह 'असंसदीय' भी बोलते रहे हैं, लिहाजा वे हिस्से रिकॉर्ड से बाहर कर दिए जाते हैं। विदेशी मंचों से भारत की छवि पर कालिख पोतने की कोशिश की जा सकती है, लेकिन

राहुल के परपरागत आरोप रहे हैं कि भारत में लोकतंत्र और संविधान खतरे में हैं। संसद, मीडिया और न्यायपालिका दबाव में काम कर रहे हैं। बहरहाल राहुल गांधी खुद से ही पूछें कि भारत में वह और उनकी पार्टी जो राजनीति कर रहे हैं, चुनाव लड़ रहे हैं और प्रधानमंत्री के खिलाफ बयानबाजी करते रहे हैं, क्या ऐसा करना किसी तानाशाही शासन में संभव है? राहुल ने वीनी की प्रशंसा करते हुए उसे 'सद्गव ये विश्वास रखने वाल' और शांतिप्रिय देश बताया है। पड़ोसी देशों के भू-भाग को हड्डपने वाला, कब्जेबाज, अपने ही देश के हजारों छात्रों का नरसंहार करने वाला, दुनिया को कोरोना वायरस की महामारी देने वाला, देशों को कजर के जाल में फंसा कर बंधक बनाने वाला देश चीन क्या 'शांतिप्रिय' हो सकता है? देश के रक्षा मंत्री रहे जॉर्ज फर्नांडीज और मुलायम सिंह यादव सरीखे दिग्गज नेताओं ने चीन को भारत का 'दुश्मन नंबर वन' देश करार दिया था। आखिर राहुल गांधी ने कौन-सा नया कूटनीतिक शोध किया है? दरअसल यह देश बखूबी

निवाचित सासद है। पगासस जासूसी प्रकरण पर कांग्रेस संसद की कार्यवाही बाधित करती रही है। इस मुद्दे पर सर्वोच्च अदालत का अंतिम फैसला अभी आना है। हालांकि अदालत एक रपट के जरिए अंशिक फैसला दे चुकी है कि राहुल के फोन की जासूसी या टैपिंग नहीं की गई है। फिर भी कैमब्रिज यूनिवर्सिटी के मंच से, एक प्रोफेसर के प्रारूप में, उन्होंने आरोप लगाया है कि विपक्षी नेताओं के फोन की जासूसी, एक इंजरायली स्पाईवेयर के जरिए, कराई जा रही है। भारत सरकार बताने को तैयार नहीं है कि उसने पैगासस की खरीद की अथवा नहीं। राहुल के परंपरागत आरोप रहे हैं कि भारत में लोकतंत्र और संविधान खतरे में हैं। संसद, मीडिया और न्यायपालिका दबाव में काम कर रहे हैं। बहरहाल राहुल गांधी खुद से ही पूछें कि भारत में वह और उनकी पार्टी जो राजनीति कर रहे हैं, चुनाव लड़ रहे हैं और प्रधानमंत्री के खिलाफ बयानबाजी करते रहे हैं, क्या ऐसा करना किसी तानाशाही शासन में संभव है? राहुल ने चीन की प्रशंसा करते हुए उसे 'सद्गव में दूसरा भूकप पहल भूकप के तझटके से शुरू हुआ और यह घंटे के बाद आया, जिसका वे कहरामनमारस के एलबिस्तान जिके उत्तर में स्थित था। भूकंपों हजारों लोगों की जान ले ली और बड़े पैमाने पर तबाही मचाई। बादिनों के बाद भी पूरे क्षेत्र में भूकंप के झटके महसूस किए जाते रहे। भारत के मानवीय सहायता अधिकारी आपदा राहत (एचएडीआर) मिशन का कोड नाम, ऑपरेशन दोर (तुकिये) था, जिसमें राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) खोज व बचाव दल और भारत के 50 इंडिपेंडेंट पैरेशूट ब्रिंगेड के 60 पैरेशूट फील्ड अस्पताल शामिल 60 पैरेशूट फील्ड (जिसे पहले एम्बुलेंस कहा जाता था) ने भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए 1956 के 53 के कोरियाई युद्ध में बहुत ख्याली अर्जित की थी। भारत की अंतर्राष्ट्रीय संकट प्रबंधन संरचना ने बहुत तेज़ी

जानता है कि किसके शासन-काल के दौरान चीन ने हमारी करीब 40,000 वर्ग किलोमीटर बेशकीमती जीभीन कबाई थी? बेशक नियंत्रण-रेखा के आसपास अतिक्रमण होते रहे हैं और हमारे जांबाज सेनिकों ने चीनियों की हड्डियां तोड़ कर उन्हें खेड़ा है।

राज्यांत्रिक हो सकता है? दस करोड़ में रुपये जाग करना। तो आर-ए-मुलाय ने सिंह यादव संस्थाखे दिग्गज नेताओं ने चीन को भारत का 'दुश्मन नंबर वन' घोषित करा दिया था। आखिर राहुल गांधी ने कौन-सा नया कूटनीतिक शोध किया है? दरअसल यह देश बखूबी जानता है कि किसके शासन-काल के दौरान चीन ने हमारी करीब 40,000 वर्ग किलोमीटर बेशकीमती जमीन कब्ज़ाई थी? बेशक नियंत्रण-रेखा के आसपास अतिक्रमण होते रहे हैं और हमारे जांबाज सैनिकों की हड्डियां तोड़ कर उठाएं खदेड़ा हैं। राहुल गांधी या कांग्रेस के चीन के प्रति अपने पूर्वाग्रह हो सकते हैं, उनके आपसे समझीते भी हो सकते हैं, लेकिन चीन पूरी तरह एक तानाशाह किस्म का विस्तरावादी देश है। हमें यह भी समझ नहीं आया कि कांग्रेस नेता 'भारत जोड़ो यात्रा' के समाप्तन पर श्रीनगर के 'लाल चौक' पर तिरंगा फहरा कर गदगद थे, लेकिन कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में कश्मीर को उत्तरावाद से प्रभावित 'हिंसक राज्य' करार दिया। राहुल ने विदेशी जमीन पर, अपने ही देश के खिलाफ, गलतबयानी की है। यह देश कैसे स्वीकार कर सकता है।

## प्रार्थी का शब्द

**वर्षों** गुजरने के बाद हिमाचल को अब शहरीकरण की व्यवस्था में

लिकानात्रक जरूरत था जनभागत म शहरी निकायों म पदा हाता अर्थतंत्र दिखाई दे रहा है। यह इसलिए भी कि शिमला नगर निगम का अस्तित्व नजर आया और फिर जयराम सरकार ने सोलन, मंडी के साथ-साथ पालमपुर के दायरे में शहरीकरण की सीमा में नए निगम जोड़ दिए। इसी कड़ी में बौबीएन, हमीरपुर व ऊना की परिधि में शहरीकरण के संबोधन अब नए नगर निगमों की रूपरेखा में मुख्यमंत्री सुखविंदर सुकूबु से निवेदन कर चुके हैं। जाहिर है शहरी निकायों की रूपरेखा में हमाचली विकास के नए आयाम और आर्थिक गतिविधियों में रोजगार के पैगाम भी पल्लवित होंगे, लेकिन सवाल शहरों को आत्मनिर्भर बनाने का है और इसके लिए आय के संसाधनों के रूप में जनता से माकूल कर अदायगी चाहिए। शहरी साधन, सुविधाएं, सेवाएं और संकल्प एक तरफ व्यय के मुकम्मल स्रोत मार्ग हैं, तो दूसरी तरफ जनता से नए करों की उगाई का बंदोबस्त करना चाहेंगे। यही तकाजा पिछले कुछ सालों से राजनीतिक रस्साकशी में फंसा है, लेकिन अब न केवल नगर निगम, बल्कि 56 शहरी निकायों की आय में संपत्ति कर जोड़ने की नई व्यवस्था कायम करने का प्रस्ताव है। शिमला की तर्ज पर यूनिट एरिया मैथड से संपत्ति कर सर्वाधिम चार अन्य नगर निगमों में अमल में लाया जाएगा। नई व्यवस्था के तहत शहर खुद में अलग-अलग जोन के हिसाब से कर को परिभाषित करेगा। यानी शहर की अहमियत, इमारतों के जीवन चक्र व मज्ज एरिया में जन सुविधाओं का हिसाब तय करेगा कि किससे कितना संपत्ति कर वसूला जाए। टैक्स के क्षेत्र में उतरें बिना शहरों का उद्घार नहीं हो सकता, लेकिन राजनीति के मुलायम इरादों ने हमाचली जनता के हाथ बांध रखे हैं। जाहिर तौर पर परजीवी बनकर नागरिक अपने परिवेश की दिशा नहीं सुधार सकते, इसलिए अनेकाले समय में कर अदायगी की सहजता से न केवल शहरों की क्षमता में सधार आएगा। बल्कि प्रार्देशिक दृष्टि में आत्मनिर्भरता कायबटूर जिले आर नालागढ़ ऐतिहासिक पव ऊटी, पैनीफौल, तोरोपली, गुदलतुर बंदी पुरम में विश्वव्यापी पर्यावरण संरक्षण अभियान के राष्ट्रीय अध्यक्ष पर्यावरण धर्मगुरु व बनरायी मूवमेंट प्रणेता पर्यावरणविद कौशल किंजा जायसवाल, बिपिएसए संस्था सचिव अरविंद कुमार और प्रधान सचिव सह पंचायत डाली बाजार मुखिया पूनम जायसवाल, कर्नाटक प्रदेश सचिव अंजू बंसल, तमिलनाडु के प्रदेश अध्यक्ष सोंडी विगरम सचिव सनी कच्छ, आंध्र प्रदेश के प्रधान अध्यक्ष श्री चंद्रशेखर के साथ पैरोपण और वृक्षों पर रक्षाबंधन दुनिया को पर्वत और प्रकृति बचाने सदेश दिव्यावर्णी दक्षिण भारत के दिवसीय कार्यक्रम का समापन होती है। एक दिन पहले किया गया। कार्यक्रम

का नया आधार भी विकसित हो पाएगा। जिस प्रदेश में डेढ़ सौ यूनिट प्री बिजली से लैंप और शुरू हुआ कारबं तीन सौ यूनिट मुफ्त बिजली का इंतजार कर रहा हो, वहाँ का अदायगी की सर्वामान्य तह जीव विकसित करना आसान नहीं। जहाँ सफाई जैसे विषय को लेकर भी मात्र पचास रुपया प्रति महीने आदा करने से नागरिक करताराहो, वहाँ नगर निकायों को कर वसूलने के लिए बहुत श्रम व संयम दिखाना पड़ेगा ऐसे में एक सरल व सहज तरीका जीवन शैली की जरूरतों की आवृत्ति में सरकारी सेवाओं के साथ जोड़ा जा सकता है। यानी बिजली का मीटर और पानी की सामान्य दरों के साथ हर महीने नगर निकायों की शुल्क वसूली जोड़ी जा सकती है। नागरिक जरूरतों से नगर निकायों की जिम्मेदारी का फलक तभी ऊचा होगा, अगर शहरी विकास योजनाओं के तहत नागरिक सुविधाओं का स्तर भी ऊचा होगा। इसके लिए हर नगर निकाय को आय बढ़ाने के स्रोत और आत्मनिर्भर होने के रास्ते खोजने होंगे। सर्वप्रथम शहरी प्रबंधन से शहरी सुशासन तक पहुंचने के लिए आत्म-विश्लेषण अतीत की गलतियों के सबक और भविष्य के लक्ष्य स्पष्ट करने होंगे। विडंबना यह है कि पिछले चार दशकों से शहरीकरण की उपेक्षा ने ऐसी जनसंख्या बढ़ा दी जो बिना किसी शहरी अदब के अंधाधंध निर्माण के निजी स्वार्थ के सिंहासन पर विराजित है। शहरी माफिया उन तमाम भवनों पर विराजित हैं, जो शहरी संपत्तियों के हिसाब से नगर निकायों की आमदनी बढ़ा सकता है। आम नागरिक से संपत्ति का वसूलने के साथ शहरी निकायों की संपत्तियां या तो खाली कराई जाएं या मार्किंग वैल्यू पर किराया वसूली की जाए। विडंबना यह भी है कि शहरी निकायों की आय व्यय का हिसाब केवल पार्श्वों की सियासत को बरीयता दे रहा है, जबकि शहर का

# भारत का ऑपरेशन दोस्त दिल और मन, दोनों जीत रहा है

लैप्टोप जनरल  
दॉ गवाहा

Dr. सुब्रत साह

रिक्वेट पमान पर 7.8 आर 7.5  
ती तीव्रता वाले दो बड़े भूकंपों ने  
क्षिणी तुर्की और उत्तरी सीरिया को  
भीर रूप से प्रभावित किया। ऐसे में  
तीव्र होता है कि अरब टेक्टोनिक  
नेट, अनातोलियन प्लेट के साथ  
पर्षण करते हुए उत्तर की ओर बढ़ते  
हैं। पहला भूकंप, 6 फरवरी को 11:17  
थानीय समय के अनुसार 04:17  
जो (6-47 पर्वाह आईप्सटी)



स काम किया, क्याकि भूकप क कुछ घंटों के भीतर, सेना मुख्यालय से 60 पैरा फील्ड अस्पताल को 11 पूर्वांह आईएस्टी तक मिशन के लिए तैयार होने के आदेश प्राप्त हुए। 60 पैरा फील्ड अस्पताल ने तत्परता से जवाब दिया - चिकित्सा विशेषज्ञ, सर्जिकल विशेषज्ञ, एनेस्थेटिस्ट, हड्डी रोग विशेषज्ञ, मैक्रिसलोफेशियल सर्जन, सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ, चिकित्सा अधिकारी, पैरामेडिक्स और एनडीआरएफ टीमों के 99 कर्मियों सहित चिकित्सा, शल्य चिकित्सा, दंत चिकित्सा और आपदा राहत उपकरणों को भारतीय वायु सेना द्वारा हिंडन एयरबेस से हवाई मार्ग से पहुंचाया गया। 8 फरवरी को तुर्किय पहुंचने के तीन घंटे के भीतर, हटे के इस्केंडरन में फील्ड अस्पताल स्थापित किया गया, जो तुर्किय में सबसे गम्भीर रूप से प्रभावित प्राता म से एक एनडीआरएफ की टीम गाजियाटेप में जमीनी स्तर पर ब राहत अभियान किए लोकप्रिय रूप से इ सहारा हस्तनेसी कहे ज भारतीय फील्ड अस्पताल दिनों की अवधि में 3604 का इलाज किया, आपा चिकित्सा देखभाल की, ठीक किया, दंत चिकित्सा बढ़े ऑपरेशन किए। 1 अधिक घायलों को भर्ती की आवश्यकता थी। फ और शल्य चिकित्सा उपक त्वरित पुनःपूर्ति के साथ, आ रहे आर्थोपेडिक उपव साथ गति को बनाए गया। संयुक्त राष्ट्र मिशन वे साथ देश के अशांत क्षेत्रों के द्वित अभियानों का करने के भारतीय सेना के

आर अनुभव न नाश्त रूप से म की। संयुक्त राष्ट्र मिशन के हिस्से रूप में, युद्धग्रस्त अंगोला, कां रवांडा, दक्षिण सूडान और अन्य भारतीय सेना के अभियान त उग्रवाद और आतंकवाद विरो अभियानों के तहत अनिवार्य र से नागरिक केन्द्रित कर्तवाई की थी। तुकुंये में भाषा की बाधा स्थानीय स्वयंसेवकों को रा प्रयासों में शामिल करके दूर किया, जिनसे बातों की व्याख्या करने और रोगियों एवं फार्मसिस के प्रबंधन में आसानी हुई। उचित लोगों ने आपदा राहत दलों दिल छू लेने वाली विदाई दी। पर तुर्की स्वयंसेवक उल्स के परिणाम का एक संदेश बहुत कुछ बताता है, आप चिकित्साकर्मियों की टीम के र में पहुंचे थे, लेकिन जब उन्होंने भारत वापस जा रहे हैं, तो आप

पास पूरे तुकिये का आशीर्वाद है। तुकिये की एडा इस्कंड्रम ने एक ट्वीट के रूप में आभार व्यक्त किया, जो सैनिक-चिकित्सकों के प्रति लोकप्रिय भावना को व्यक्त करती है, - आप सभी हमारे नायक हैं। हम उन दिनों में एक-दूसरे को देखेंगे, जब हम रो नहीं रहे होंगे [यानि, खुशी के समय में]। मैं भारत आऊंगी, लेकिन हम आपको भविष्य में हटे में फिर से देखना चाहेंगे। हम आप लोगों से प्यार करते हैं। तर्की के एक मेडिकल

छात्र ने सी 17 से बापस भारत आने वाले एक चिकित्सा अधिकारी को विदाई संदेश भेजा, आपको याद रखना चाहिए कि आपका एक घर तुकिये में भी है और आपका एक भाई भी है, जो आपकी मेजबानी करने के लिए आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। यहां तक कि 60 पैरा फील्ड अस्पताल और एनडीआरएफ की टीमों ने क्षेत्र के लोगों का दिल और मन, दोनों जीत लिया। वैश्विक स्तर पर भी, भारत की मानवीय सहायता तीन बातों में अलग रही; पहला, संकट की स्थिति में तेजी से निर्णय लेना और तेजी से कार्यान्वयन; दूसरा, हमारे सैन्य बलों की कठिनतम परिस्थितियों के लिए अनुकूल होने और पीड़ितों के साथ सहानुभूति रखने की सराहनीय क्षमता और तीसरा, मानवीय मूल्यों व सिद्धांतों को किसी भी अन्य विचार से ऊपर स्थित रखना।

सितंबर 2022 में, क्राड समूह के चार देशों- भारत, यू.एस., ऑस्ट्रेलिया और जापान ने एचएडीआर साझेदारी के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। नवंबर 2022 में, भारत ने आगरा में एक बहु-राष्ट्रीय, बहु-एजेंसी एचएडीआर अभ्यास %समन्वय 2022% की मेजबानी की, जिसमें आसियान देश शामिल थे। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा व्यक्त किए गए जी-20 मंत्र, एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्यत की भावना के अनुरूप भारत दुनिया भर में आपदाओं के पीड़ितों के साथ मजबूती से खड़े होकर आपदा प्रबंधन और राहत कारों में नेतृत्व की भूमिका निभा रहा है।

लेखक, एनएसएबी और डीसीओएस के पूर्व सदस्य हैं; 2014 में जीओसी, 15 कोर के रूप में उन्होंने क्षमीत में बड़े पैमाने पर

रखना। प्राकृतिक आपदाओं से निपटने और मानवीय सहायता तथा बाढ़ से बचाव और राहत कार्यों का नेतृत्व किया था।

**नालागरा पूवत पर पांचारापण व तृक्षा पर रक्षाबंधन कर  
पर्यावरणविद् कौशल ने दिया प्रकृति को बचाने का संदेश**



यं बटूरः तमिलन

मूल ज्ञान मत्रों की शपथ दिलाते हुए पर्यावरणविद ने पर्यावरण धर्म को अपनाने की अपील की। बनराखी मूवेमेंट के प्रणेता कौशल ने बताया कि नीलगिरी पर्वत को साउथ का हिमालय माना जाता है। फर्क बस इतना है कि हिमालय क्षेत्र में सेव (फल) अधिक मिलता है। और वहां का मुख्य खेती चाय है। इतिहास के पश्चों में यह क्षेत्र इसलिए चर्चित है कि वर्ष 1790 में टीपू सुल्तान ने कई देशों से पौधा लाकर उसी पर्वत से यूकिलिप्टस का पौधा लगाने की शुरुआत किया था। ठीक उसी तरह पर्यावरणविद कौशल किशोर ने भी दक्षिण भारत में पौधा लगाने का शुभारंभ वर्ष 1983 में उसी नीलगिरी पर्वत से किया था। उसी का परिणाम है कि आज भी नीलगिरी पर्वत के दर्जनों चौटियों पर यूकेलिप्टस का बन तैयार होकर उसकी कहानी बयां कर रहा है। इसीलिए तो दक्षिण भारत में

भी कहा जाता है। पर्यावरण धर्मगुरु कौशल ने पर्यावरण धर्म और वन राखी मूवमेंट के तहत जंगल लगाओ जंगल बचाओ को लेकर दक्षिण भारत में 1983 में और 25 वर्ष पूरा होने के उपरांत सिल्वर जुबली मनाने के लिए 2008 में इसके बाद 2015 में महात्मा गांधी कृषि विश्वविद्यालय बेंगलुरु में और 2017 में माराथाली के कई स्कूलों में पर्यावरण धर्म के पाठ पढ़ाया था। कोरेना काल के बाद दक्षिण भारत का पहला प्रवास के दौरान विभिन्न जगहों पर पौधरोपण व वृक्षों पर रक्षाबंधन किया गया। पर्यावरणविद कौशल ने कहा कि उनके द्वारा चलाए गए निशुल्क पौधा वितरण सह रोपन के 56 वर्ष और पर्यावरण धर्म व वनराखी मूवमेंट के 46वां वर्ष पूरा होने के उपरांत पिछले वर्ष नेपाल भूटान समेत देश के 10 राज्यों में दो लाख पौधों का वितरण सह रोपण के साथ वृक्षों पर रक्षाबंधन

आयोजन करने का निर्णय लिया गया था। जिसकी सुरुआत माह जुलाई में पलमू प्रमंडल के तत्कालीन आयुक्त जटाशंकर चौधरी ने छतरपुर के ग्राम पंचायत डाली बाजार के कौशल नगर से निशुल्क पौधा वितरण शिविर एवं वृक्षों पर रक्षाबंधन कर किया था। श्री जायसवाल ने बताया कि पर्यावरण को सुरक्षित और संरक्षित करने के लिए दक्षिण भारत के कई राज्यों में पर्यावरण धर्म, बन राखी मूर्मेट और बी पी एस ए संस्था के प्रदेश अध्यक्षों व सचिवों की नियुक्ति की गईउसी की कठी में कई स्थानों के ऐतिहासिक नीलगिरी पर्वत पर कार्यक्रम आयोजित कर पौधरोपण किया गया। कार्यक्रम में शामिल प्रमुख लोगों में श्री चंद्रशेखर, अंजू बंसल, नानगलाहुचन, अविन, सेलवाकवि, धनंजय कुमार, ध्वनियां, शांतनु कुमार, संतोष कुमार आदि शामिल थे।

नागरिक बोध

## हिरण पर क्यों लादें घांस ?

**हमारे** राजस्थान और उन माध्यम के स्कूलों  
लेकिन जारा रुस की तरफ देखें।

वाल्दिमीर पूतने कल एक राजाजा पर दस्तखत किए हैं, जिसके अनुसार अब रूस के सरकारी कामकाज में कई भी रूसी अफसर अंग्रेजी शब्दों का इस्तेमाल नहीं करेगा। इस राजाजा में यह भी कहा गया है कि अंग्रेजी मुहावरों का प्रयोग भी बर्जित है। लेकिन जिन विदेशी भाषाएँ के शब्दों का कोई रूसी पर्याय ही उपलब्ध नहीं है, उनका मजबूरन उपयोग किया जा सकता है। रूस ही नहीं, चीन, जर्मनी, फ्रांस, और जापान जैसे देशों में स्वभाषाओं की रक्षा के कई बड़े अभियान चल पड़े हैं। आजकल दुनिया काफी सिकुड़ गई है। सभी देशों में अंतरराष्ट्रीय व्यापार, कूटनीति, आवागमन आदि काफी बढ़ गया है। इसीलिए इन क्षेत्रों से जुड़े लोगों को विदेशी भाषाओं का ज्ञान जरूरी है लेकिन भारत-जैसे अंग्रेजों के बात को काफी अच्छी तरह समझ था। लेकिन कैसा दुर्भाग्य है कि राजन्यान में कांग्रेस की सरकार है और अशोक गहलोत जैसे संस्कारवान नेता उसके मुख्यमंत्री हैं और उन्होंने उन अंग्रेजी स्कूलों का नाम 'महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूल' रख दिया है। अशोक गहलोत जो कि कांग्रेसी नेता है और उ.प्र. के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, जो कि भाजपा के नेता हैं, दोनों जरा महात्मा गांधी और गुरु गोलवलकर के इन कथनों पर ध्यान दें:- "यदि मैं तानाशाह होते तो आज ही विदेशी भाषा में शिक्षा देना बंद कर देता। सारे अध्यापकों को स्वदेशी भाषा अनिवार्य रूप से नहीं पढ़ाई जाती है। हमारे बच्चों पर सिर्फ अंग्रेजी नहीं लाई जाए। उन्हें बड़े होकर कई विदेशी भाषाएं सीखने की छूट हो लेकिन यदि आगाज किया है। घरों में टिमटिमाई ढेबरी की जगह एलीडी और इनवर्टर की प्रकाश ने ले लिया है। कभी - कभी मिट्टी का तेल यानी केरोसिन न मिलने से दादी और अम्मा कड़वा तेल का दीपक जलाती थी। लेकिन अब यह बातें कहानिया हो गई हैं। प्रकृति में अल्हड़ फागुन जीवंत है लेकिन बदली परम्पराओं और हमारी सोच में वह बूढ़ा हो चला है। फागुन में रास है न रंग। बस होली के नाम पर औपचारिकता दिखती है। अब गालों पर गुलाल मलने सिर्फ रसम निभाई जाती है जबकि दिल नई मिलते। गाँवों में फागुन वाली भौजाई गायब है। जब कच्चे मकान होते थे तो भौजाई और घर की औरतें माटी-गोबर लगाती थी। पूर्वांचल में गांव की भाषा में इसे गोबरी कहते हैं। गोबरी लगाते बक्त अगर कोई देवर उधर से गुजरता था तो भौजाई दौड़ा कर मुंह और कपड़े में गोबरी लगा फागुन और होली के हुडंग का आगाज करती थी। फिर देवर भी भौजाई को छेड़ने के











e-mail : prabhatmantraranchi@gmail.com

संक्षिप्त खबरे  
बिजली की चपेट ने आने से एक युवक हुआ घायल



प्रभात मंत्र संचाददाता

**केसरई :** केसरई थाना क्षेत्र के बाहडोगा दुलेलो निवासी अन्कुर रिक्सों को बिजली के ऊंचे लाइन से गोमार रूप से घायल हो गया। उस व्यक्ति का पीठ और हाथ जल गया है। करंट के बजह से उसके कपड़े भी जल गये हैं। ऐसी जानकारी के अनुसार युवक मानसिक बाल दान से कमज़ोर था और चालू लाइन में बिजली के ऊंचे लाइन से गोमार रूप से घायल हो गया। इसी क्रम में उसके करेंट लाइन गया। गोमार के लोगों ने केसरई प्रखण्ड के सांसद प्रतिनिधि सह भाजपा जिला शाश्वत भीड़िया प्रभारी रिहा जुनों को फेने के माध्यम से जानकारी दी। एकमुं चुनाव मिलते ही उन्होंने 108 एक्सेंस उपलब्ध कराया और सरद अप्यासी सिमडोगा के लिए भेज दिया गया।

